कक्षा : प्रथम– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) देवता के प्रकार हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 2 (घ) 10 (ख)

(ii) मक्खी, मच्छर, भंवरा, कसारी आदि जीव है-
(क) बेइन्द्रिय (ख) पंचेन्द्रिय
(ग) तेइन्द्रिय (घ) चतुरिन्द्रिय (घ)

(iii) पदार्थ के यथार्थ स्वरूप का चिन्तन करना कहलाता है-
(क) सत्य मनोयोग (ख) असत्य मनोयोग
(ग) मिश्र मनोयोग (घ) व्यवहार मनोयोग (क)

(iv) जो धार्मिक भावनाओं से कोसे दूर रहते हैं, ऐसे जीवों के परिणाम होते हैं-
(क) कृष्ण लेश्या (ख) नील लेश्या
(ग) कापोत लेश्या (घ) तेजो लेश्या (ख)

(v) भींत में खूँटी का दृष्टान्त गुण है-
(क) काल द्रव्य (ख) पुद्गलास्तिकाय
(ग) आकाशास्तिकाय (घ) धर्मास्तिकाय (ग)

(vi) आचार्यादि की सेवा करना है-
(क) वैयावृत्य (ख) स्वाध्याय
(ग) व्युत्सर्ग (घ) ध्यान (क)

(vii) मोक्ष की तीव्र इच्छा है-
(क) सम (ख) अनुकम्पा
(ग) संवेग (घ) आस्था (ग)

(viii) 'जीव चेतना लक्षण युक्त है' 67 बोलों में किसका भेद है-
(क) भावना (ख) स्थानक
(ग) यतना (घ) आगार (ख)

(ix) श्रद्धा के कारण पैदा होने वाली हृदय की कोमलता को कहते हैं-
(क) श्रद्धान (ख) शुद्धि
(ग) लक्षण (घ) विनय (घ)

(x) पच्चक्खाण के भेद हैं-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 10 (घ) 3 (क)

(xi) 'मुष्टि आदि संकेतपूर्वक तप करे' वह कहलाता है-
(क) णिरवसेसं (ख) संकेयं
(ग) अद्धा (घ) णियंटियं (ख)

(xii) 22 दण्डक में केवल एक ही भेद किसमें होता है-
(क) पच्चक्खाणी (ख) मूल गुण पच्चक्खाणी
(ग) अपच्चक्खाणी (घ) उत्तर गुण पच्चक्खाणी (ग)

(xiii) समुच्चय जीव और 24 दण्डक में संज्ञा पायी जाती है-
(क) 8 (ख) 10
(ग) 5 (घ) 7 (ख)

(xiv) क्षुधा वेदनीय कर्म के उदय से संज्ञा होती है-
(क) मैथुन संज्ञा (ख) भय संज्ञा
(ग) आहार संज्ञा (घ) परिग्रह संज्ञा (ग)

(xv) विज्ञान का फल क्या है-
(क) संयम (ख) पच्चक्खाण
(ग) अनास्रव (घ) अक्रिया (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) आहारक शरीर की प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त में पूरी होती है। (हाँ)
(ii) जाति स्मरण ज्ञान मतिज्ञान में शामिल होता है। (हाँ)
(iii) जो अनादि काल से मिथ्यात्वी है, जिसमें मुक्ति पाने की योग्यता नहीं होती है, वह भवी होता है। (नही)
(iv) घ्राणेन्द्रिय के 60 विकार होते हैं। (नही)
(v) सब पापों की जड़ मिथ्यादर्शन शल्य है। (हाँ)
(vi) जिसका वर्ण अलसी के फूल के समान होता है, वह पद्मलेश्या है। (नही)
(vii) जीवादि नवतत्त्वों का परिचय प्राप्त करना परमार्थ है। (हाँ)
(viii) तत्त्व के विषय में संदेह होना 'वितिगिच्छा' है। (नही)
(ix) समकित धर्म रूपी भोजन का थाल है, यह यतना का भेद है। (नही)
(x) भव्य जीव कर्मों को क्षय करके मोक्ष में जाता है। (हाँ)
(xi) एकान्त पण्डित ज्ञानी है उसके पच्चक्खाण-सुपच्चक्खाण है। (हाँ)
(xii) 'उपवास' अद्धा तप है। (हाँ)
(xiii) चारों आहार का त्याग कर संथारा करें, वह संकेयं पच्चक्खाण का भेद है। (नही)
(xiv) वोदाण का फल क्रिया होता है। (नही)
(xv) तिर्यंच गति से आये हुए जीव में आहार संज्ञा अधिक होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i) कवल का परिमाण	(क) 3	परिमाण कडं
(ii) पर्याप्ति	(ख) शुक्ल लेश्या	6
(iii) दृश्य अदृश्य रूप	(ग) 5	वैक्रिय शरीर
(iv) ज्ञानावरणीय	(घ) आस्रव	घाती कर्म
(v) ऊँच नीच कुल में जन्म	(च) परिमाण कडं	गोत्र
(vi) श्रोत्रेन्द्रिय के विषय	(छ) भूषण	3
(vii) अव्रत	(ज) गोत्र	आस्रव
(viii) सफेद वर्ण	(झ) घाती कर्म	शुक्ल लेश्या
(ix) लक्षण	(य) वैक्रिय शरीर	5
(x) चार तीर्थ की सेवा	(र) 6	भूषण

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं रक्त मांस, मज्जा, अस्थि आदि स्थूल पुद्गलों से बना हूँ। औदारिक
(ii) मैं आत्मा की उपभोग शक्ति को प्रभावित करने वाला कर्म हूँ। उपभोगान्तराय कर्म
(iii) मैं ऐसा कर्म हूँ, जिसके उदय से जीव एक भव में रूका रहता है। आयुष्य कर्म
(iv) मैं गुण से 'चलन' गुण वाला हूँ। धर्मास्तिकाय
(v) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसकी स्थिति 5 लघु अक्षर अ, इ, उ, ऋ, लृ का मध्यम रीति से उच्चारण करने में जितना समय लगे उतनी होती है। अयोगी केवली गुणस्थान
(vi) सुरभिगंध-दुरभिगंध मेरे दो विषय होते हैं। घ्राणेन्द्रिय

(vii) मैं पुण्य का नौवाँ भेद हूँ। नमस्कार पुण्य
(viii) मैं आत्मा का भेद हूँ जो योगों की प्रवृत्ति के आधार पर बनता हूँ। योग आत्मा
(ix) दुःखी जीवों के दुःख को मिटाने की इच्छा मेरा लक्षण है। अनुकम्पा
(x) जैन धर्म की उन्नति एवं प्रचार के लिए प्रयत्न करना मेरा अर्थ है। प्रभावना
(xi) मैं दूषण का प्रथम भेद हूँ। शंका
(xii) मैं यतना का तीसरा भेद हूँ। दान
(xiii) मैं छः काय के रक्षक के होने वाला पच्चक्खाण हूँ। सुपच्चक्खाण
(xiv) मैं एकान्त बाल के होने वाला पच्चक्खाण हूँ। दुपच्चक्खाण
(xv) पेट का खाली होना मेरा लक्षण है। आहार संज्ञा

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) बन्ध तत्त्व किसे कहते हैं ?
कर्म पुद्गलों का आत्मा के साथ दूध-पानी की तरह, लौहपिण्ड-अग्नि की तरह संबद्ध होना,बंध तत्व है।

(ii) लेश्या किसे कहते हैं, इसके दो भेद लिखिए।
जीव के शुभाशुभ परिणामों को लेश्या कहते हैं, इसके दो भेद अप्रशस्त और प्रशस्त।

(iii) महाव्रत किसे कहते हैं ?
हिंसादि सावद्य प्रवृत्तियों का तीन करण तीन योग से त्याग करना महाव्रत कहलाता है।

(iv) दूषण किसे कहते हैं ?
श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को दूषण कहते हैं।

(v) 67 बोल में उल्लिखित 'भावना' को परिभाषित कीजिए।
विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना भावना है।

(vi) 'अणागयं' पच्चक्खाण का अर्थ लिखिए।
जो तप आगामी काल में करना है वह पहले कर लें।

(vii) परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होने के प्रथम दो कारण लिखिए।
1 अत्यन्त इच्छा-मूर्च्छा होने से 2. लोभ मोहनीय कर्म के उदय से।

(viii) अक्रिया का फल क्या है ?
अक्रिया का फल 'सिद्धि' है।

(ix) आर्तध्यान-रौद्रध्यान अप्रशस्त ध्यान क्यों कहलाते हैं ?
आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान दोनों कर्म-बंधन के हेतु और आत्मा को विषम भावरूपी विभावों में भटकाने वाले होने से 'अप्रशस्त ध्यान' कहलाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) चक्षुरिन्द्रिय के विषय और विकार लिखिए।
विषय-काला, नीला, लाल, पीला, सफेद
विकार- 5 सचित्त, 5 अचित्त, 5 मिश्र, 15 शुभ, 15 अशुभ, 30 पर राग, 30 पर द्वेष,
इस प्रकार 60 विकार।

(ii) पडिवाई मिथ्यात्वी का अर्थ लिखिए।
जिन जीवों ने एक बार सम्यक्त्व प्राप्त कर लिया, किन्तु सम्यक्त्व का वमन कर देने से वर्तमान में मिथ्यात्व दशा में है।

(iii) 67 बोल में श्रद्धान के अन्तिम दो भेद लिखिए।
1. जिन्होंने सम्यक्त्व का वमन कर दिया है, उन श्रद्धाभ्रष्ट पुरूषों की संगति नहीं करना।
2. कुदर्शनियों की संगति का त्याग करना।

(iv) राजाभियोग तथा गणाभियोग आगार को परिभाषित कीजिए।

1. राजाभियोग-राजा की पराधीनता से अन्यतीर्थिक तथा उनके माने हुए देवादि को वंदना-नमस्कार करना पड़े तो सम्यक्त्व व्रत का अतिक्रमण नहीं करता।

2.गणाभियोग-गण अर्थात् बहुजन समुदाय के आग्रह से अनिच्छापूर्वक अन्यतीर्थिक तथा उनके माने हुए देवादि को वन्दना-नमस्कार करना पड़े तो सम्यक्त्व व्रत का अतिक्रमण नहीं करता।

(v) देश उत्तर गुण पच्चक्खाण के सात भेद लिखिए।

तीन गुणव्रत-दिशा परिमाण व्रत, उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत, अनर्थदण्ड विरमणव्रत

चार शिक्षाव्रत-सामायिक, देशावगासिक, पौषधोपवास, अतिथि संविभाग व्रत।

(vi) ओघ संज्ञा किसे कहते हैं ?

बिना उपयोग धुन ही धुन में किसी कार्य को करने की प्रवृत्ति होना ओघ संज्ञा है।

जैसे बैठे-बैठे पैर हिलाना, तिनके तोड़ना आदि।

(vii) सवणे-नाणे का थोकड़ा कहाँ से लिया है तथा भगवान ने संयम का क्या फल बतलाया है ?

भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पाँचवे उद्देशक से लिया है।संयम का फल अनास्रव बतलाया है।

(viii) काल द्रव्य को गुण की अपेक्षा से समझाइए।

गुण से-वर्तन गुण, कपड़े और कैंची का दृष्टान्त। वर्तन-परिवर्तन काल का लक्षण है। नये को पुराना करे, पुराने को नष्ट करे।

(ix) आस्रव के 20 भेदों में से अन्तिम तीन भेद लिखिए।

1. काया को वश में नहीं रखे तो आस्रव।

2.भंड उपकरण अयतना से लेवे और अयतना से रखे तो आस्रव।

3. सुई कुशाग्र मात्र कोई भी वस्तु अयतना से लेवे और अयतना से रखे तो आस्रव।